।। नमो राघवाय ।। श्रीहनुमते नमः ।।

श्रीहनुमानचालीसा (मूलपाठ)

सम्पादक : धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय कविकुलरत्न
पद्मविभूषण वाचस्पति श्रीचित्रकूट-तुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्यजी महाराज
(जीवनपर्यन्त कुलाधिपति, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट)

दोहा

श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज, निज-मन-मुकुर सुधारि ।
बरनउँ रघुबर-बिमल-जस, जो दायक फल चारि ।।
बुद्धि-हीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर। जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।
राम-दूत अतुलित-बल-धामा। अंजनिपुत्र-पवनसुत नामा।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति-निवार सुमति के संगी।।
कंचन-बरन बिराज सुबेषा। कानन कुंडल कुंचित केशा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज-जनेऊ छाजै।।
शंकर स्वयं केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग-बन्दन।।
बिद्यावान गुणी अति चातुर। राम-काज करिबे को आतुर।।
प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया। राम-लखन-सीता-मन-बसिया
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सँजीवनि लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहसबदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा। नारद शारद सहित अहीशा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज-पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु-मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं
दुर्गम काज जगत के जे ते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते।।
राम-दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपे। तीनौं लोक हाँक ते काँपे।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब-पर राम राय-सिरताजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोइ लावै। तासु अमित जीवन फल पावै।।
चारिउ जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत-उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर-निकन्दन राम-दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन्ह जानकी माता।।
राम-रसायन तुम्हरे पासा। सादर हो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावे। जनम जनम के दुख बिसरावे।।
अंत-काल रघुबर-पुर जाई। जहाँ जनम हरिभक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
यह शत बार पाठ कर जोई। छूटहिं बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान-चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि-चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवन तनय संकट-हरन, मंगल-मूरति-रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर-भूप ।।

Typeset: @ankurnagpal108